National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(63): 154-156
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डा.रतीश कुमार झा
डॉ.जगन्नाथमिश्र संस्कृत महाविद्यालय,
पस्टन, नवटोली, मधुबनी, बिहार

Correspondence:
डा.रतीश कुमार झा
डॉ.जगन्नाथमिश्र संस्कृत महाविद्यालय,
पस्टन, नवटोली, मधुबनी, बिहार

कादम्बिनी ग्रंथानुसार उल्काविचार का समीक्षात्मक अध्ययन

डा.रतीश कुमार झा

भारतीय सभ्यता और संस्कृति का मूल आधार वेद है। वेदाङ्ग के ६ अंगों मे ज्योतिष अत्ययन्त हैं। इस प्रसंग मे आचार्य भास्कर का कथन इस प्रकार प्राप्त होता है। यथा-

वेदचक्षुः किलैदं स्मृतं ज्योतिषं मुख्यता चाङ्गमध्येऽस्य तेनोच्यते।
संयुतोऽपीतरैः कर्णनासादिश्च चाक्षुषाङ्गेन हीनो व किञ्चित्करः॥[1]

सिद्धान्तशिरोमणि गणिताध्याय श्लोक सं. 11

अपरिमित आकाशमंडल मे जो भी तेजोमय बिम्ब दिखाई देता है, वह सभी ज्योति:शब्द से प्रयोग किया जाता है। शास्त्र दृष्टि से या व्यवहार दृष्टि से इसकी उपयोगिता प्रमुख हैं। इस प्रसंग मे लगधमुनि का उक्ति इस प्रकार है। यथा –

यथाशिखा मयूरानां नागानां मणयो यथा।
तदवेदाङ्गशास्त्राणां ज्योतिष मूर्ध्नि संस्थितम्।[2]

वेदाङ्गज्योतिष पृ. सं. – 4

ज्योतिषशब्द की व्युत्पतिः पाणिनीयसूत्रानुसारेण द्युतिरिसन्नादेश्च जः इत्युणादिसुत्रेण ज्वलित कर्मणो द्युतिधात्रोंसिन प्रत्यये दकारस्य च जकार देशे गुणे च कृते ज्योति: शब्दस्य निष्पर्तिभवति।[3]

उणादिसूत्रम् 275, पाणिनीयसूत्रम् 4/3/87

ज्योतिषशास्त्र त्रिस्कन्धात्मक है, जैसा कि नारदीय संहिता में कहा गया हैं। यथा-

सिद्धांतसंहिताहोरारुपस्कंधत्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मल चक्षुज्यौतिश्शास्त्रमनुत्तेयम्॥[4]

नारदसंहिता भूमिका पृ. सं. – 11

आचार्य वाराहमिहिर ने भी वृहत्संहिता ग्रंथ मे ज्योतिषशास्त्र को तीन स्कन्धों में ही स्विकार किये है। यथा-

ज्योति: शास्त्रमनेकभेदविषयं स्कन्धत्रयाधिष्ठितं।
तत्कात्स्योपनयस्य नाम मुनिभि: संकीर्त्यते संहिता॥
स्कन्धेऽस्मिन गणितेन या ग्रहगतिस्त्रन्त्राभिधानस्तवसौ।
होराऽन्योङ्ग विनिश्चयस्य कथितः स्कन्धस्तृतीमोऽपरः॥[5]

बृहत्संहिता -1.9.

संहिता शब्द की व्युत्पतिः सम- सम्यक प्रकारेण धातुधाञ-धारणे धातोर्निष्ठायां क्त प्रत्यये 'दद्यातेर्हि' इति सूत्रेण हि इत्यादेशे सम्+हि+क्त संहित पदात् "अजाद्यतष्टाप" अनेन सूत्रेण टाप प्रत्यये

संहिताशब्दो निष्पद्यते। अर्थात समृष्टिगत फल विचार को संहिता कहते हैं।

बृहत्संहिता ग्रन्थ में आचार्य गर्ग के बचन को बाराह मिहिर ने इस प्रकार से व्यक्त किये है। यथा –

गणित जातकं शाखा यो वेत्ति द्विजपुङ्गवः।
त्रिस्कंधज्ञो विनिर्दिष्टः संहिता पारगश्च सः ॥[6]

बृहत्संहिता उपनयनाध्याय: 1.9

बृहत्संहिता, ग्रंथ में आचार्य वाराहमिहिर का उक्त इस प्रकार प्राप्त होता है। यथा -

संहिता पारगश्च देवचिन्तको को भवति[7]

बृहत्संहिता - 1.20

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधुनिक विद्वानों में अग्रण्य विद्यावारिधि पं. श्री मधुसूदन ओझा जी कृत कादम्बिनी ग्रंथ संहिता स्कन्ध की एक अनुपम कृति हैं। यह ग्रंथ 6 अधिकारों मे विभक्त है। चतुर्थ अधिकार उल्काधिकार है।

जिसमे प्रत्येक शब्द में व्यापकता एवं विलंक्षणता का बोध होता है जो सम्पूर्ण संसार के प्राणीमात्र के लिए उपयोगी हैं। हम जैसे अल्पज्ञ इस उल्काधिकार में उल्काविषयक शुभ-तथा अशुभ फल उपस्थापित करने का प्रयास कर रहा हूँ।

उल्कापिंड

आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार उल्कापिंड अंतरिक्ष से पृथ्वी के वायुमंडल मे प्रवेश करते हैं तो घर्षण के कारण जलने लगते हैं और प्रकाश उत्पन्न करते है, जिसे उल्का या टूटता तारा कहा जाता हैं। यदि उल्कापिण्ड पूरी तरह से जलने से पहले पृथ्वी की सतह तक पहुँच जाता है, उसे उल्कापिंड कहा जाता है।

इसके उत्पत्ति के बारे में वैज्ञानीकों का कहना है कि उल्कापिण्ड धूमकेतु क्षुद्रग्रहों या अन्य ग्रहों से निकले मलवे हो सकते हैं। साथ ही साथ एकसाथ यदि कई उल्कापिंड गिरते हैं, तो उसे उल्का वर्षा कहा जाता है। उल्कापिंडों के प्रभाव से पृथ्वी पर गड्ढे बन जाते है, तथा इसका शुभ तथा अशुभ प्रभाव पृथ्वी पर देखने को मिलता है। परंतु वैज्ञानिकों के पास अभी तक इसके पूर्ण रहस्य का आभाव प्रतीत होता है।

भारतीय ज्योतिषशास्त्र के संहिता स्कन्ध में उल्कापिंड के बारे में व्यापक जानकारी उपलब्ध हैं, जिसका उपस्थापन इस लेख के द्वारा व्यक्त करने का प्रयास कर रहा हूँ।

आचार्य वाराहमिहिर ने बृहत्संहिता के उल्काध्याय में इस प्रकार से कहे हैं। स्वर्ग में शुभ फल भोगकर गिरते हुए प्राणियों का स्वरूप उल्का है। यथा -

दिवि युक्तशुभफलानां पततां उपाणि यानि तान्युल्काः।[8]

बृहत्संहिता उल्काधिकार शलोक सं. -1

गंगादि आचार्यों का मत है कि लोकपाल लोगों की परीक्षा करके शुभाशुभ फल-ज्ञान के लिये जिन अस्त्रों को छोड़ते है, उसी नाम उल्का हैं। यथा -

स्वासानि संसृजन्त्येते शुभाशुभनिवेदितः।
लोकपाला महात्मानो लोकानां ज्वालितानि तु॥[9]

बृहत्संहिता उल्काधिकार पृ. सं.- 424

उल्का के भेद

पं. श्री ओझा जी ने कादम्बिनी ग्रंथ में उल्का को 5 नामों से संबंधित किये हैं। यथा-

व्रजं विद्युन्महोल्का च धिष्ण्या तारेति पञ्चद्या।
उल्केति संज्ञयाख्याता अन्तरिक्षोद्भवाड्यः।।

कादम्बिनी उल्काधिकार श्लोक सं. 201

आचार्य वाराहमिहिर ने भी धिष्णया, उल्का, अशनि, बिजली और तारा ये पाँच उल्का के भेद मानते हैं। यथा -

धिष्णयोल्काशनि विद्युत्तारा इति पञ्चधा भिन्नाः।

बृहत्संहिता उल्कालंक्षणाध्याय श्लोकसंख्या – 1

अन्य संहिता, ग्रंथों मे भी उल्का के 5 भेद माने गये हैं। तथा इसके फल कथन एवं प्रभावादि का विस्तृत विवेचन मिलता है। कादम्बिनी तथा बृहत्संहिता मे व्यापक समानता प्राप्त होती है, जिसका उपस्थापन निम्नप्रकार किया जा सकता है। उल्का 15 दिन में घिण्ष्या 15 दिन मे अशनि 45 दिन मे बिजली 6 दिन तारा 6 दिन मे फल देती है। ताराफल का 1/4 घिण्ष्या ½ तथा विद्युत, उल्का, अशनि तीनो सम्पूर्ण फल को देती है। यथा -

उल्का पक्षेणफलं तद्विष्ण्या शनि स्त्रिभिः पक्षैः।
विद्युदर होमि षडभिः तद्वत्ताय विपाचयति।।
तारा फलपादकरी फलार्द्धक्षत्री प्रकीर्तिता द्विष्ण्या।
तिस्रः सम्पूर्णफला विद्युदयोकाशनिस्वेति॥

बृहत्संहिता उल्काधिकार श्लोक सं. 213

ओझा जी ने भी कादंम्बिनी ग्रन्थ में उल्का के फल तथा फल प्रदान करने की समय सीमा आचार्य बाराहमिहिर के द्वारा कहे गये वाक्य को प्रमाणित करते हैं। यथा -

विद्युतारादिनैः षड्भिउल्का पक्षेण वीक्षिता।
बज घिष्ण्या या निमिः पक्षै फलपाकाय कल्पते।
अशनिर्विद्युउल्का वा धत्ते यावत् फले बलम्।
घिष्ण्या तदर्द्ध तारा तु घिष्ण्यार्ध कुठतै फलम् ॥

कादम्बिनी उल्काधिकार श्लोक सं. 202, 203

संहिता ग्रंथों में प्राय: उल्का स्वरूप तथा फलकथन में व्यापक समानता प्राप्त होती है। सामान्यरूप से उल्कापतन को अत्यंत ही अशुभ माना गया है। अशनि तथा बिजली को बहुत ही अशुभ तथा कष्टमयी माना जाता है। जैसा कि वराह ने बृहत्संहिता में कहे है। यथा-

अशनि स्वनेन महता नृगजास्व मृगाश्मवेश्मतठ पशुषु।
निपतति विदारयन्ती धरातलं चक्रसंस्थाना ॥
विद्युत् सत्वत्रासं जनयन्ती तटतटस्वना सहसा।
कुटिलविभासा निपतति जीवेन्धाभिषु ज्वलिता॥

बृहत्संहिता उल्काधिकार शलोक सं. 4, 5

ओझा जी ने विद्युत को बज्रं कहा है, तथा इसका फल अत्यन्त कष्टदायी कहते है। यथा -

नादेन महता वज्रं विदारयदिलातलम्।
अश्मवेश्मतरुप्राणितनूपरि पतत्यलम्॥

कादम्बिनी उल्काधिकार शलोक सं. 4

आचार्य अश्यप, वाराहमिहिर तथा ओझा जी ने अपने अपने ग्रंथों में उल्का के विभिन्न आकृतियों के विवेचन किये हैं। आचार्य काश्यप के अनुसार यथा -

नरेमतुरगाश्वश्मवृक्षेषु च पतेत सदा।
ज्वलन्ति चक्रवद दृश्या त्वशनी शवसंयुता॥
विद्युतत्रासकटी भीमा शब्दयन्ती तटस्तय।
वृहच्छीषोडतिसूक्ष्मा च जीवेषु च पतेत्सदा॥
धनुंषि दश या दृश्या सा च घिष्ण्या प्रकीर्तिता।
ज्वलिताङ्गरसदृशी द्वौ हस्तो सा प्रमाणत:॥
पद्यताम्राकृतिस्यैव हस्तमात्रायता गता।
तिर्यमूर्ध्वमधो सोदृयमानेव तारका ॥
उल्का मुर्धनि विस्तीर्णा पतन्ती वर्धते तु सा।
तनुपुच्छा नृमात्रा तु बहुभेद समावृता॥
आयुध प्रेत सदृशी जम्बुकोष्टखराकृति।
घुम्रवर्णा तु पापाख्या विभीर्णा या तु मध्यमा॥
ध्वजपद्मेभहंसामा पर्वताश्च समप्रभा ।
श्रीवृक्षशंड्खसदृशी या चौल्का सा शिवप्रदा॥

बृहत्संहिता उल्कालंक्षणाध्याय पृष्ट संख्या – 427

आचार्य वाराहमिहिर ने उल्का के कुछ आकृतियों को शुभफलदायक भी कहा है। जिसमें ध्वज, मत्स्य, हाथी, पर्वत, कमल, चन्द्रमा, घोड़ा तयी हुई धूलि, हंस, श्रीवृक्ष वज्र (हीरा या शस्त्र) शंख स्वस्तिक रूप वाली उल्का दिखाई देने पर लोगों में कुशलता और सुभिक्ष करती है। यथा -

ध्वजक्षषगिरिरिकरिकलेंदुतुरगसन्तप्तरजत हंसामा:।
श्रीवृक्षवज्रशंड्खस्वस्तिकरुपा: शिवसुभिक्षा:॥

बृहत्संहिता उल्कालंक्षणाध्याय श्लोकसंख्या – 10

सारांश में यह कहा जा सकता हैं कि उल्काविचार अत्यन्त गुढ़ तथा रहस्यात्मक है। समष्टिगत शुभाशुभ फल ज्ञात करने के लिए आधुनिक तकनीकी सहायता तथा नवाचार से यदि गहन शोध नैष्टिकरूप से किया जाय तो नये-नये रहस्यों का खोज होगा जिससे समाजोपयोगी शुभता का व्यापक ज्ञान हो सकेगा।